2 जनवरी 2012, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

जैन पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के व्याख्यान देखिये जी-जागरण पर प्रतिदिन प्रात: 6.40 से 7.00 बजे तक

वर्ष : 34, अंक : 19 सम्पादक : पण्डित रतनचन्द भारिल्ल आजीवन शुल्क : 251 रुपये

जनवरी (प्रथम), 2012 (वीर नि. संवत्-2538) सह-सम्पादक : पण्डित संजीवकुमार गोधा वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की साधनाभूमि सोनगढ एवं सौराष्ट्र-गुजरात में -

जयपुर पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आमंत्रण

सोनगढ (गुज.) : श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 21 से 27 फरवरी 2012 तक होने वाले श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव का आमंत्रण दि. 18 दिसम्बर को बहुत हर्षोल्लास एवं आनंद के वातावरण में डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल जयपुर, श्री हसमुखभाई वोरा (अध्यक्ष-सोनगढ ट्रस्ट), श्री अजितजी जैन बड़ौदा (स्वागताध्यक्ष-प्रतिष्ठा महोत्सव समिति), श्री अमृतभाई मेहता फतेहपुर (अध्यक्ष-चैतन्यधाम), श्री पवनकुमारजी जैन मंगलायतन, पण्डित हेमन्तभाई गांधी सोनगढ, श्री कान्तिभाई मोटानी देवलाली (ट्रस्टी-देवलाली ट्रस्ट), श्री हितेन अनंतभाई शेठ मुम्बई, श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई, श्री विपिनभाई बादर जामनगर, श्री भीमजीभाई शाह लंदन, श्री दिनकरभाई शाह लंदन, श्री प्रफुल्ल डी.राजा नैरोबी, श्री बटुकभाई (अध्यक्ष-नैरोबी मुमुक्षु मण्डल), डॉ. किरीटभाई गोसालिया यू.एस.ए., श्री रमेशभाई शाह बड़ौदा, श्री जीतूभाई सोनगढ, पण्डित कमलचंदजी पिड़ावा, श्री मोतीलालजी खैरागढ, श्री रमेशजी शास्त्री सोनगढ, श्री पीयूषजी शास्त्री जयपुर, श्री सोनूजी शास्त्री जयपुर, श्री तपिशजी शास्त्री जयपुर एवं टोडरमल महाविद्यालय के 50 विद्यार्थियों द्वारा दिया गया।

इस अवसर पर आमंत्रण देते हुए डॉ. भारिल्ल ने कहा कि आध्यात्मिकसत्पुरुष श्रीकानजीस्वामी की प्रेरणा से स्थापित श्री टोडरमल स्मारक भवन के पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर हम सभी आपसी मतभेदों को भुलाकर मुमुक्षु समाज की एकता प्रदर्शित करना चाहते हैं; अत: हम गुरुदेवश्री की कर्मभूमि सोनगढ एवं जहाँ-जहाँ उनकी प्रेरणा से गुजरात में पंचकल्याणक हुये हैं, वहाँ-वहाँ आमंत्रण देने हेतु आये हैं। आप सभी पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव में पधारकर पूरी मुमुक्षु समाज में एकता स्थापित करने के हमारे प्रयासों में सहयोगी बनें।

इस अवसर पर उन्होंने प्रतिवर्ष टोडरमल महाविद्यालय के छात्रों के साथ सोनगढ आने का संकल्प व्यक्त किया। डॉ. भारिल्ल के अतिरिक्त श्री अजितजी जैन बड़ौदा, श्री अमृतभाई मेहता फतेपुर एवं श्री पवनजी जैन अलीगढ ने भी पंचकल्याणक में जयपुर आने का आमंत्रण दिया।

सोनगढ एवं अन्य सभी स्थानों से ब्र. बहनों एवं अनेक साधर्मियों ने पंचकल्याणक में जयपुर आने का संकल्प व्यक्त किया।

दिनांक 18 दिसम्बर को **सोनगढ** में आमंत्रण देने के पश्चात् दिनांक 19 दिसम्बर को **जामनगर, सुरेन्द्रनगर, बढवाण व जोरावरनगर** में, दिनांक 20 दिसम्बर को **राजकोट** में, दिनांक 21 दिसम्बर को **अहमदाबाद (नवरंगपुरा) व तलौद** में, दिनांक 22 दिसम्बर को **अहमदाबाद (वस्त्रापुर) व हिम्मतनगर** में, दिनांक 23 दिसम्बर को **अहमदाबाद (पालडी व नरोडा)** इत्यादि स्थानों पर आमंत्रण दिया गया।

ज्ञातव्य है कि सोनगढ आदि सभी स्थानों पर गुरुदेवश्री के प्रवचनों के पश्चात् डॉ. भारिल्ल द्वारा उनके प्रवचनों का सारांश अत्यंत मार्मिक शब्दों में बताया गया, जिसकी सभी ने बहुत प्रशंसा की।

अहमदाबाद में आमंत्रण देने हेतु श्री अजितभाई मेहता नवरंगपुरा, श्री सेवंतीभाई गांधी, श्री रमेशभाई शाह, श्री अमृतभाई मेहता, पण्डित रजनीभाई दोशी, श्री अनिलभाई गांधी तलोद, श्री सतीशभाई मेहता और महाविद्यालय के स्नातक पण्डित ऋषभजी शास्त्री एवं पण्डित ध्रुवेशजी शाह शास्त्री अहमदाबाद का उल्लेखनीय सहयोग रहा।

सभी स्थानों से अनेक लोगों ने पंचकल्याणक में जयपुर आने की भावना व्यक्त की एवं अपने आवास फार्म भी भरकर दिये।

पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु -

आवास कार्यालय का उद्घाटन

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में दिनांक 25 दिसम्बर को पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु आवास कार्यालय का उद्घाटन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल, पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल, श्री पवनजी जैन मंगलायतन, श्री हितेन अनंतभाई शेठ मुम्बई एवं श्री अक्षयभाई दोशी मुम्बई ने स्वस्तिक चिह्न बनाकर आवास कार्यालय का उद्घाटन किया।

कार्यक्रम में आवास व्यवस्था के प्रमुख श्री नवीनजी शास्त्री, श्री करणजी शाह एवं कार्यालय प्रमुख श्री अभिजीतजी का तिलक लगाकर स्वागत किया गया।

पंचकल्याणक की आवास व्यवस्था हेतु विशेष रूप से तैयार किये गये सॉफ्टवेयर का बटन दबाकर डॉ. भारिल्ल द्वारा उद्घाटन किया गया।

सम्पादकीय – 71

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

– पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा – ११६

विगत गाथा में यह ज्ञान कराया है कि जो स्पर्श, रस, गंध में अति आसक्त होते हैं, तथा उनके विषयों में आसक्त रहते हैं वे त्रैइन्द्रिय होते हैं।

अब प्रस्तुत गाथा में चौ इन्द्रिय जीवों के विषय में बताते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

उद्दंसमसयमक्खियमधुकरिभमरा पयंगमादीया।
रूवं रसं च गंधं फासं पुण ते विजाणंति।।११६।।

(हरिगीत)

मधुमक्खी भ्रमर पतंग आदि डांस मच्छर जीव जो।
वे जानते हैं रूप को भी अतः चौइन्द्रिय कहें।।११६।।

डांस, मच्छर, मक्खी, मधुमक्खी, भंवरा और पतंगे आदि जो जीव रूप, रस, गंध और स्पर्श को जानते हैं, वे चतुरिइन्द्रिय जीव हैं।

आचार्य अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय और चक्षुरिन्द्रिय के आवरण के क्षयोपशम के कारण तथा श्रोत्रेन्द्रिय एवं मन के आवरण का उदय होने से स्पर्श, रस, गन्ध और वर्ण को जानने वाले डांस आदि जीव मनरहित चतुरिन्द्रिय जीव हैं।

(दोहा)

डांस मसक माखी विरड़ि, भ्रांगी भ्रमर पतंग।
रूप गंध रस फरस फुनि, जानत विषय प्रसंग।।४३।।

(सवैया इकतीसा)

निर्विकार ग्यान-सुख-सुधारस-पान बिना,
बाहिर सुखी है जीव इंद्रियाभिलाषी है।
तातैं चौरिंद्रिय-जाति-नामकर्म बंध करै,
ताहीकै उदय माहिं आप दृष्टि राखी है।।
कारन एक इंद्री और मनकै विचार बिना,
सेष चारि इन्द्रीकरि स्वाद रीति चाखी है।
कालका निमित्त पाय आप और आन मानी,
अपने सरूप होई श्रीजिनेस साखी है।।४४।।

(दोहा)

जब सरूपकी दृष्टि है, तब पररूप न कोइ।
परकै सब परहरनतैं, रहि निरूप-पद सोइ।।४५।।

कवि कहते हैं कि डांस, मक्खी, मच्छर, भौंरा, पतंगा आदि चार इन्द्रिय जीव, पाँचवीं इन्द्रिय व मन बिना आत्मा के आनन्द रहित मात्र स्पर्श, रस, गंध और रूप के विषय को ही ग्रहण करने के अभिलाषी रहने से चौइन्द्रिय नामकर्म बांधते हैं। उसके उदय में चारों इन्द्रिय के स्वाद में उलझे रहते हैं।

कभी समय पाकर जब स्वरूप की दृष्टि प्राप्त होती है तो पर की प्रवृत्ति को छोड़कर स्वरूप को प्राप्त कर लेते हैं।

इस गाथा पर प्रवचन करते हुए गुरुदेव श्री कानजीस्वामी कहते हैं कि "डांस, मच्छर, मक्खी, भौंरा, पतंगा आदि जीव रूप-रस-गंध व स्पर्श को जानते हैं। अतः वे चतुरिन्द्रिय जीव हैं।

जीव के क्षयोपशम के लिए इन्द्रियों के परमाणुओं को आना पड़े ऐसी पराधीनता नहीं है। आत्मा जड़ इन्द्रियों का कर्त्ता नहीं है। जैसे-जैसे एक-एक इन्द्रियों का क्षयोपशम बढ़ता जाता है, वैसे-वैसे ही एक-एक इन्द्री बढ़ती जाती है। ऐसा निमित्त-नैमित्तिक सम्बन्ध है।

जयसेनाचार्य की टीका का उल्लेख करते हुए गुरुदेव कहते हैं कि जीवों को अपने शुद्ध चैतन्य स्वरूप की पहचान करके निर्विकार स्वसंवेदन ज्ञान भावना से सुख सुधारस पान करना चाहिए; किन्तु आत्मा का भान नहीं होने से जीवों को अपने सुख सुधारस का पान नहीं हो पाता तथा स्पर्श, रस, घ्राण व चक्षु आदि के विषय में सुख मान कर वे विकारी सुख को भोगते हैं। इस कारण चतुरिन्द्रिय नामकर्म का उपार्जन करता है और चौइन्द्रिय पर्याय में उत्पन्न होता है।" •

गाथा – ११७

विगत गाथा में चतुरिन्द्रिय जीवों के प्रकार बताये।

अब प्रस्तुत गाथा में पंचेन्द्रिय जीवों के प्रकार बताते हैं।

मूल गाथा इसप्रकार है –

सुरणरणारयतिरिया वण्णरसप्फासगंधसद्दण्हू।
जलचरथलचरखचरा बलिया पंचेंदिया जीवा।।११७।।

(हरिगीत)

भू-जल-गगनचर सहित जो सैनी-असैनी जीव हैं।
सुर-नर-नरक तिर्यंचगण ये पंच इन्द्रिय जीव हैं।।११७।।

वर्ण, रस, स्पर्श, गंध और शब्द को जाननेवाले देव, मनुष्य, तिर्यंच और नारक जो जलचर, थलचर और नभचर होते हैं, वे पंचेन्द्रिय जीव हैं।

आचार्य श्री अमृतचन्द्र टीका में कहते हैं कि स्पर्शनेन्द्रिय, रसनेन्द्रिय, घ्राणेन्द्रिय, चक्षुइन्द्रिय और श्रोत्रेन्द्रिय के आवरण के क्षयोपशम के कारण तथा मन के आवरण का उदय होने से मन रहित एवं स्पर्श, रस, गंध, वर्ण और शब्द को जानने वाले जीव पंचेन्द्रिय होते हैं और कुछ पंचेन्द्रिय जीव मन के आवरण का क्षयोपशम होने से मन सहित होते हैं। उनमें देव, मनुष्य व नारकी मन सहित ही होते हैं। तिर्यंच मन सहित व मन रहित दोनों प्रकार के होते हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

सुर-नर-नरक-तिरिय गति, इन्द्रिय विषय प्रधान।
जलचर-थलचर-खचर सब, पंचेन्द्रिय बलवान।।४६।।

(सवैया इकतीसा)

पंचेन्द्रिय जाति नामकर्म कै उदय भये,
पंचेन्द्रिय रूप सारे जीवौं मैं जगते हैं।
तिनमें कोई मन–इन्द्री बिना डौलैं,
केई मनधारी, जीव समान लगत हैं।।
देव नारकी कै समान कहावे जीव,
पसु माँहिं दौनौ भेद लोक मैं वगत है।
ऐसै पंचेन्द्रिय पद पावै है अनेक बार,
पंचपद पावै नाहिं मूढ़ता पगत है।।४७।।

(दोहा)

ए पंचेन्द्रिय पद प्रगट, आपद–पद की खानि।
जो आपन पद कौं लखै, तौ इन पद की हानि।।४८।।

उक्त पद्यों में कवि कहते हैं कि पंचेन्द्रिय नामकर्म के उदय से देव, मनुष्य, नरक, तिर्यंच गतियों में विषयों की प्रधानता है। जलचर–थलचर–नभचर – सभी तिर्यंच पंचेन्द्रिय जीव हैं। उनमें कुछ तो बिना मन वाले असैनी होते हैं, कुछ मन वाले सैनी होते हैं। देव व नारकी तो मन वाले ही होते हैं तथा तिर्यंचों में दोनों प्रकार के होते हैं। जीव इसप्रकार अनेक बार पंचेन्द्रिय तो जाते हैं; परन्तु आत्मज्ञान से शून्य होने से पंचमगति आज तक प्राप्त नहीं की। ये पंचेन्द्रियों के पद तो आपद की खान है, जो जीव अपने स्वभाव को पहचान लेते हैं वे इस संसार के दुःख से मुक्त हो जाते हैं।

गुरुदेव श्री कानजीस्वामी व्याख्यान करते हुए कहते हैं कि ''जब जीवों का विकास होते–होते ये एक इन्द्रिय, दो, तीन, चार एवं पंच इन्द्रियों में आते हैं तो वहाँ देव, मनुष्य, नारकी तथा तिर्यंच गति के जीव के रूप में जन्म लेते हैं। उनके पाँचों इन्द्रियाँ होती हैं; परन्तु पशु योनि में जलचर, नभचर और थलचर के रूप में मछली, पक्षी तथा कुत्ता–बिल्ली आदि की पर्यायों में जन्म लेते हैं। पंचेन्द्रिय जीवों के स्पर्श–रस–गंध–वर्ण एवं शब्द – इन पाँचों विषयों का ज्ञान होता है। वे इन पाँचों इन्द्रियों और मन द्वारा पर पदार्थों को तो जानते हैं; परन्तु आत्मा को नहीं पहिचानते। आत्मा इन्द्रियों द्वारा जाना भी नहीं जा सकता। वह तो अतीन्द्रिय स्व–संवेदन ज्ञान द्वारा जाना जाता है।

ये पंचेन्द्रिय जीव संज्ञी व असंज्ञी के भेद से दो प्रकार के होते हैं। जो मन सहित हैं, वे संज्ञी और जो मन रहित हैं, वे असंज्ञी जीव हैं।''

आचार्य जयसेन टीका में कहते हैं कि ''आत्मा का स्वभाव अतीन्द्रिय है। उसके आश्रय से तात्विक सच्चा आनन्द उत्पन्न होता है; परन्तु जिन्हें आत्मा के स्वभाव का भान नहीं है तथा पांच इन्द्रियों के विषयों में सुख मानते हैं, वे पंचेन्द्रिय जाति नामकर्म उपार्जन करते हैं; परन्तु आत्मज्ञान न होने से आत्महित नहीं होता।''

यही बात अंत में जयसेनाचार्य ने कही कि जो जीव आत्मा के अतीन्द्रिय स्वभाव को नहीं जानते और पाँच इन्द्रियों के विषयों में सुख मानते हैं, वे पंचेन्द्रिय नामकर्म का उपार्जन कर संसार में ही जन्म–मरण करते हैं।

इसप्रकार गुरुदेवश्री ने संसारी अज्ञानी जीवों का परिचय कराते हुये पाँच इन्द्रियों में देव, नारकी व तिर्यंचों की चर्चा करके बताया कि जो जीव आत्मा को नहीं पहचानते, वे संसार में परिभ्रमण करते रहते हैं।●

गाथा – ११८

विगत गाथा में पंचेन्द्रिय जीवों के विषय बताये हैं तथा जो इन विषयों में रत रहते हैं, वे संसार में ही डोलते हैं – यह कहा है।

प्रस्तुत गाथा में देवों के चार निकायों की तथा पंचेन्द्रिय तिर्यंचों, मनुष्यों के भेदों की चर्चा है। मूल गाथा इसप्रकार है –

देवा चउण्णिकाया मणुया पुण कम्मभोगभूमीया।
तिरिया बहुप्पयारा णेरइया पुढ़विभेयगदा।।११८।।

(हरिगीत)

नर कर्मभूमिज भोग भूमिज, देव चार प्रकार हैं।
तिर्यंच बहुविध कहे जिनवर, नरक सात प्रकार हैं।।११८।।

देवों के चार निकाय हैं, मनुष्य कर्मभूमिज एवं भोगभूमिज – ऐसे दो प्रकार के हैं। तिर्यंच अनेक प्रकार के हैं और नारकी के भेद उनकी पृथ्वियों के अनुसार हैं।

टीकाकार आचार्य अमृतचन्द्र कहते हैं कि यहाँ इन्द्रियों के भेदों की अपेक्षा से जीवों का चतुर्गति सम्बन्ध दर्शाते हुए विषय का उपसंहार किया है।

देवगति नामकर्म और देवायुकर्म के उदय के निमित्त से देव होते हैं। वे भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिष्क और वैमानिक – ऐसे निकाय (समूह) के भेदों के कारण चार प्रकार के हैं। मनुष्यगति नामकर्म और मनुष्य आयु के उदय में मनुष्य होते हैं। वे कर्मभूमिज और भोगभूमिज के भेद से दो प्रकार के होते हैं। तिर्यंचगति नामकर्म व तिर्यंच आयु के उदय में तिर्यंच होते हैं। वे पृथ्वी, लट, जूँ, डांस, जलचर, उरग पक्षी, सर्प तथा चौपाये पशु इत्यादि भेदों के कारण अनेक प्रकार के होते हैं। इसीप्रकार नरक आयु नामकर्म व नरक आयु कर्म के उदय में नारक होते हैं। वे रत्नप्रभा, शर्कराप्रभा, बालुकाप्रभा, पंकप्रभा, धूमप्रभा, तमःप्रभा और महातमप्रभा – ऐसे भेदों के कारण सात प्रकार के होते हैं। उनमें देव, मनुष्य व नारकी पंचेन्द्रिय ही होते हैं।

इसी बात को कवि हीरानन्दजी काव्य में कहते हैं –

(दोहा)

चतुर निकाई देव हैं, करम–भोग नर भेद।
तिरजग बहुत प्रकार हैं, नारक भूगत छेद।।५०।।

(सवैया इकतीसा)

देवगतिनाम देव–आयु–कर्मउदै सेती,
देवरूप धारी जीव चतुरनिकाय है।
नरगतिनाम नर–आयु–उदै भये जीव,
करम वा भोगभूमिविषैं उपजाय है।।
पसूगति पसू–आयु–उदै पाय मही आदि,
पाँचौं इंद्री विषै भेद बहुधा कहाय है।
नरकगति नरक–आयु–उदै सात भूमि,
डोलै जैन बिना कहौ कैसैंकै रहाय है।।५१।।

(शेष पृष्ठ ७ पर...)

PEOPLE FOR ANIMAL LIBERATION

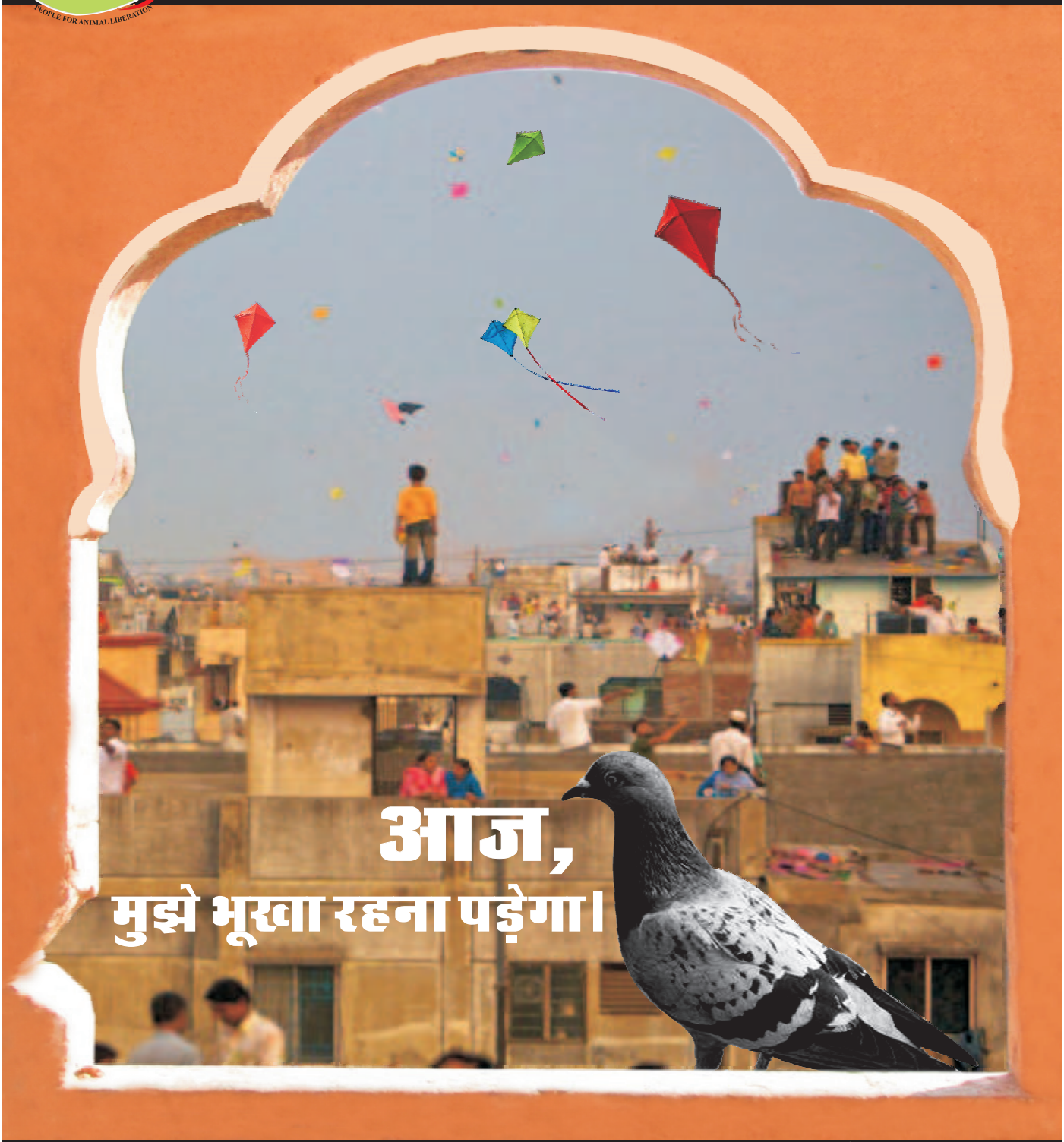

पाल की सदस्यता लेने हेतु एवं सहयोग करने के लिए सम्पर्क करे :

+91-8094082001 • E-mail : info@palindia.org • www.PALIndia.org

facebook.com/PeopleforAnimalLiberation

विशेष अनुरोध :- पोस्टर को सार्वजनिक स्थल पर लगा देवें।

कल्याणक

तुमरे पण मंगलमाहि सही
जिय उत्तम पुन्न लियो सब ही

भगवन् इस लोक में जो उत्तम पुण्य था
उसे आपके पंच कल्याणकों में
आपके अमर भक्तों ने
उस उत्कृष्ट चतुर्थकाल में लिया
इस समय तो तीर्थंकरों के
पंचकल्याणक होते नहीं
श्रीविहार उनके होते नहीं
समवसरण की रचना होती नहीं
दिव्यध्वनि उनकी खिरती नहीं
फिर हम अपना हित कैसे करें ?
अपना कल्याण कैसे करें ?
आत्मा ही आत्मा का गुरु है
आत्मा अपना हित–अहित
अपने स्वयं के परिणामों से करता है
इसलिए आत्मा ही कल्याणक है
उपचार से ही कहे गए हैं कल्याणक पाँच
निश्चय से तो एक ही कल्याणक है
मोक्ष कल्याणक
और उसका अधिकारी आत्मा कल्याणक है
काल कोई उत्कृष्ट–निकृष्ट नहीं होता
जीव के परिणाम के परिणामस्वरूप ही
काल इसप्रकार कहलाता है
उत्सर्पिणी–अवसर्पिणी कालखंड
जीवों के परिणाम पर ही निर्भर हैं, काल द्रव्य पर नहीं
इस काल में साक्षात् तीर्थंकर नहीं होते
पर उनके जिनबिम्ब तो होते हैं
उनके पंच कल्याणक होते हैं
तीर्थंकरों के पंचकल्याणकों में भी
अपना कल्याण/पुण्यार्जन
भव्य जीव अपने उस प्रकार के परिणामस्वरूप ही करते हैं
तीर्थंकरों के जीवन के वे प्रसंग तो
निमित्त मात्र होते हैं।
तीर्थंकरों के जिनबिम्बों के पंचकल्याणक भी
तीर्थंकरों के ही पंच कल्याणक हैं
न जाने ऐसे अवसर हमारे जीवन में कितनी बार आए हैं
जयपुर में ऐसा अवसर
हमारे जीवन में फिर एक बार आया है
उनका पहले हमने जितना लाभ नहीं उठाया
उससे अधिक इसका लाभ हमें उठाना है।
आलोक चाहे सूर्य का हो, चाहे चंद्र का
या फिर चाहे दीपक का
अर्थ के अवलोकन में अंतर नहीं पड़ता
अक्ष अगर सम्यक् हों तो अर्थ प्रत्यक्ष हो जाते हैं
अक्ष में ही अगर कोई त्रुटि हो तो
दिन के उजियारे में भी चश्मे लगाने पड़ते हैं।

– बाहुबलि भोसगे

पंचकल्याणक हेतु शास्त्री विद्वानों का अभूतपूर्व सहयोग

पण्डित टोडरमल स्मारक भवन में फरवरी माह में होने जा रहे पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव हेतु संपूर्ण मुमुक्षु समाज का उत्साह देखने को मिल रहा है। श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धांत महाविद्यालय के भूतपूर्व स्नातक विद्वान भी इस महामहोत्सव को सफल बनाने के लिए तन–मन–धन से सक्रिय सहयोग प्रदान कर रहे हैं। पण्डित टोडरमल स्नातक परिषद की विशेष योजना में अब तक पंचकल्याणक प्रतिष्ठा फंड की विभिन्न मदों में 158 शास्त्री विद्वानों ने लगभग 21 लाख 56 हजार 711 रुपये की राशि सहयोग स्वरूप प्रदान की है। जिसकी सूची नवम्बर (द्वितीय) एवं दिसम्बर (प्रथम) के अंक में प्रकाशित हो चुकी है। इसके पश्चात् भी अनेक शास्त्री विद्वानों द्वारा सहयोग राशि प्राप्त होने का सिलसिला चालू है। 14 दिसम्बर से 30 दिसम्बर के बीच जो स्वीकृतियाँ आई हैं, उनकी सूची निम्नानुसार है –

51000/– रुपये	पं. जितेन्द्र, अनिलजी शास्त्री मुम्बई
21000/– रुपये	पं. रवीन्द्रकुमारजी शास्त्री नरसाई
21000 /– रुपये	पं. अनंतकुमार मांगीलालजी जैन मुम्बई
11000/– रुपये	पं. मनोजजी शास्त्री करेली
11000/– रुपये	पं. अंचलजी शास्त्री ललितपुर
5100/– रुपये	पं. रितेशजी शास्त्री डडूका
5100/– रुपये	पं. रत्नेशजी मेहता अहमदाबाद
5100/– रुपये	पं. सुनीलजी जैनापुरे राजकोट
5100/– रुपये	पं. आशीषजी शास्त्री भिण्ड
5100/– रुपये	पं. प्रवेशजी भारिल्ल करेली
5100/– रुपये	पं. अरुणजी शास्त्री (मौ) सूरत
5100/– रुपये	पं. धर्मेन्द्रजी शास्त्री (बड़ामलहरा) सूरत
5100/– रुपये	पं. हेमन्तजी शास्त्री उदयपुर
1,55,800/– रुपये (कुल राशि)	

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 से 25 जनवरी 2012	राघौगढ (म.प्र.)	पंचकल्याणक
30 जन. से 5 फरवरी	अजमेर (राज.)	पंचकल्याणक
21 से 27 फरवरी	जयपुर (राज.)	पंचकल्याणक

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

87 चौबीसवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

आकुलतारूप दु:ख की उत्पत्ति के कारणों पर प्रकाश डालते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं –

''तथा आकुलता होती है वह रागादिक कषायभाव होने पर होती है; क्योंकि रागादिभावों से यह तो द्रव्यों को अन्य प्रकार परिणमित करना चाहे और वे द्रव्य अन्य प्रकार परिणमित हों; तब इसके आकुलता होती है। वहाँ या तो अपने रागादि दूर हों या आप चाहें उसीप्रकार सर्वद्रव्य परिणमित हों तो आकुलता मिटे; परन्तु सर्वद्रव्य तो इसके आधीन नहीं हैं। कदाचित् कोई द्रव्य जैसी इसकी इच्छा हो, उसीप्रकार परिणमित हो, तब भी इसकी आकुलता सर्वथा दूर नहीं होती; सर्व कार्य जैसे यह चाहे वैसे ही हों, अन्यथा न हों, तब यह निराकुल रहे; परन्तु यह तो हो ही नहीं सकता; क्योंकि किसी द्रव्य का परिणमन किसी द्रव्य के आधीन नहीं है। इसलिए अपने रागादिभाव दूर होने पर निराकुलता हो; सो यह कार्य बन सकता है; क्योंकि रागादिभाव आत्मा के स्वभावभाव तो हैं नहीं, औपाधिकभाव हैं, परनिमित्त से हुए हैं और वह निमित्त मोहकर्म का उदय है; उसका अभाव होने पर सर्व रागादिक विलय हो जायें तब आकुलता का नाश होने पर दु:ख दूर हो, सुख की प्राप्ति हो। इसलिए मोहकर्म का नाश हितकारी है।

तथा उस आकुलता का सहकारी कारण ज्ञानावरणादिक का उदय है। ज्ञानावरण, दर्शनावरण के उदय से ज्ञान-दर्शन सम्पूर्ण प्रगट नहीं होते; इसलिए इसको देखने-जानने की आकुलता होती है। अथवा यथार्थ सम्पूर्ण वस्तु का स्वभाव नहीं जानता तब रागादिरूप होकर प्रवर्तता है, वहाँ आकुलता होती है।

तथा अंतराय के उदय से इच्छानुसार दानादि कार्य न बनें, तब आकुलता होती है। उनका उदय है, वह मोह का उदय होने पर आकुलता को सहकारी कारण है; मोह के उदय का नाश होने पर उनका बल नहीं है; अंतर्मुहूर्तकाल में अपने आप नाश को प्राप्त होते हैं; परन्तु सहकारी कारण भी दूर हो जाये तब प्रगटरूप निराकुलदशा भासित होती है। वहाँ केवलज्ञानी भगवान अनन्तसुखरूप दशा को प्राप्त कहे जाते हैं।[१]''

उक्त कथन में मूलत: तो मोह के उदय में होनेवाले मिथ्यात्व और कषाय भावों को दु:ख का कारण बताया गया है; किन्तु मोह के सद्भाव में ज्ञानावरणादि के उदय में होनेवाले भावों को भी सहयोगी कारण कहा है, पर मोह के अभाव में वे कुछ भी नहीं कर सकते।

इसीप्रकार अनंत आकुलतारूप दु:ख का बाह्य सहयोगी कारण मिथ्यात्व और कषायभावरूप मोह के उदय के साथ होनेवाले अघातिया कर्मों के उदय से प्राप्त संयोगों को भी कहा गया है; पर **मोह के अभाव में संयोग कुछ भी नहीं कर सकते।**

अघातिया कर्मों के संबंध में पण्डितजी के विचार इसप्रकार हैं –

''तथा अघाति कर्मों के उदय के निमित्त से शरीरादिक का संयोग होता है; वहाँ मोहकर्म का उदय होने से शरीरादिक का संयोग आकुलता को बाह्य सहकारी कारण है। अंतरंग मोह के उदय से रागादिक हों और बाह्य अघाति कर्मों के उदय से रागादिक के कारण शरीरादिक का संयोग हो, तब आकुलता उत्पन्न होती है। तथा मोह के उदय का नाश होने पर भी अघाति कर्म का उदय रहता है, वह कुछ भी आकुलता उत्पन्न नहीं कर सकता; परन्तु पूर्व में आकुलता का सहकारी कारण था, इसलिए अघाति कर्म का नाश भी आत्मा को इष्ट ही है।

केवली को इनके होने पर भी कुछ दु:ख नहीं है, इसलिए इनके नाश का उद्यम भी नहीं है; परन्तु मोह का नाश होने पर यह कर्म अपने आप थोड़े ही काल में सर्वनाश को प्राप्त हो जाते हैं।

इसप्रकार सर्व कर्मों का नाश होना आत्मा का हित है। तथा सर्व कर्म के नाश ही का नाम मोक्ष है। इसलिए आत्मा का हित एक मोक्ष ही है और कुछ नहीं – ऐसा निश्चय करना।[१]''

उक्त कथन का सार यह है कि न तो अघातिया कर्मों के उदय में प्राप्त संयोगों में सुख है और न घातिया कर्मों के उदय में प्राप्त होनेवाले मोहादिरूप विकारीभावों में ही सुख है; सुख तो एकमात्र भगवान आत्मा में ही है और वह आत्मा के आश्रय से ही प्राप्त होता है, आत्मा के दर्शन, ज्ञान, चारित्र से ही प्राप्त होता है। अत: **जिन्हें अनाकुलतारूप सच्चे सुख की कामना हो; वे अपने आत्मा को जानें, पहिचानें, उसमें ही अपनापन स्थापित करें, उसमें ही जम जावे, रम जावे, समा जावे, उसका ही ध्यान करें; क्योंकि सच्चे सुख की प्राप्ति का एकमात्र यही उपाय है और इसे ही सम्यग्दर्शन-ज्ञान-चारित्ररूप मोक्षमार्ग कहते हैं।**

इस पर कुछ लोग कहते हैं कि न सही अनाकुलतारूप मोक्षसुख, पर संसार में पुण्योदय से प्राप्त इष्ट संयोगों से प्राप्त होनेवाला सांसारिक सुख तो प्राप्त होगा ही।

उक्त अभिप्राय पर विचार करते हुए पण्डित टोडरमलजी लिखते हैं–

''संसारदशा में सुख तो सर्वथा है ही नहीं; दु:ख ही है। परन्तु किसी के कभी बहुत दु:ख होता है, किसी के कभी थोड़ा दु:ख होता है; सो पूर्व में बहुत दु:ख था व अन्य जीवों के बहुत दु:ख पाया जाता है, उस अपेक्षा से थोड़े दु:खवाले को सुखी कहते हैं।

तथा उसी अभिप्राय से थोड़े दु:खवाला अपने को सुखी

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०६-३०७

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०७

मानता है; परमार्थ से सुख है नहीं। तथा यदि थोड़ा भी दु:ख सदाकाल रहता हो तो उसे भी हितरूप ठहरायें, सो वह भी नहीं है; थोड़े काल ही पुण्य का उदय रहता है और वहाँ थोड़ा दु:ख होता है, पश्चात् बहुत दु:ख हो जाता है; इसलिए संसार–अवस्था हितरूप नहीं है।[१]''

इसप्रकार यह सुनिश्चित है कि संसार में सच्चा सुख है ही नहीं। **सच्चा सुख तो एकमात्र मोक्ष में ही है।** इतना स्पष्ट हो जाने के बाद मोक्ष में जाने की भावना रखनेवाले सच्चे मुमुक्षु की ओर से पण्डितजी प्रश्न उपस्थित करते हैं –

''यहाँ प्रश्न है कि मोक्ष का उपाय काललब्धि आने पर भवितव्यानुसार बनता है या मोहादि के उपशमादि होने पर बनता है या अपने पुरुषार्थ से उद्यम करने पर बनता है सो कहो ?

यदि प्रथम दोनों कारण मिलने पर बनता है तो हमें उपदेश किसलिए देते हो ? और पुरुषार्थ से बनता है तो उपदेश सब सुनते हैं, उनमें कोई उपाय कर सकता है, कोई नहीं कर सकता है; सो कारण क्या ?[२]''

यहाँ प्रश्नकार ने मोक्ष के उपाय बनने में तीन विकल्प खड़े किये हैं –

१. काललब्धि आने पर भवितव्यानुसार।

२. मोहादि के उपशम होने पर।

३. पुरुषार्थ से उद्यम करने पर।

आरंभ के दो उपायों पर तो प्रश्नकार ने ही – 'तो फिर हमें उपदेश क्यों देते हो ?' – यह कहकर प्रश्नचिह्न खड़ा कर दिया है और तीसरे पर यह कहा कि उपदेश तो सभी सुनते हैं; पर कोई उपाय कर सकता है और कोई नहीं – इसका क्या कारण है ?

प्रश्नकार का कहना यह है कि यदि काललब्धि आने पर ही मोक्ष का उपाय होता है तो फिर जब काललब्धि आयेगी, तब हो जायेगा; हम क्या करें ? और कर्मों के उपशमादि होने पर होता है तो जब कर्मों के उपशमादि होंगे, तब हो जायेगा; इसमें भी हम क्या करें ? क्योंकि न तो काललब्धि लाना हमारे हाथ में है और न परद्रव्यरूप कर्मों में कुछ करना। अत: आप हमें मोक्षमार्ग प्रगट करने का उपदेश क्यों देते हो, प्रेरणा क्यों देते हो?तात्पर्य यह है कि ऐसी स्थिति में उपदेश देना, प्रेरणा देना तो निरर्थक ही है।

दूसरे यदि उपदेश से मुक्ति का मार्ग प्रगट करने का पुरुषार्थ प्रगट होगा तो फिर सभी उपदेश सुननेवालों को मोक्षमार्ग का पुरुषार्थ प्रगट होना चाहिए; पर ऐसा होता नहीं है। इसका कारण क्या है ? इसप्रकार प्रश्न के रूप में शंकाकार ने अपना पक्ष सतर्क प्रस्तुत किया है।

आठवें अधिकार में उपदेश का स्वरूप विस्तार से स्पष्ट किया गया है; पर यहाँ शिष्य की ओर से यह कहा गया है कि जीव को उपदेश देना व्यर्थ है; क्योंकि उसके हाथ में मोक्ष का उपाय करना है ही नहीं। जो होना है, वह (होनहार) और जब होना है, तब (काललब्धि) – यह सब तो सभी का अनादि से अनंतकाल तक का सुनिश्चित है। जब उसमें कुछ फेरफार संभव ही नहीं है, तब मोक्ष का उपाय करो – यह कहने का क्या अर्थ है ?

इसीप्रकार कर्म के उपशमादि भी हमारे लिए परद्रव्य की क्रियायें हैं। उनमें भी हमारा कुछ नहीं चलता; क्योंकि उनके और हमारे बीच में अत्यन्ताभाव की वज्र की दीवाल है। अत: उनमें भी कुछ करने का उपदेश निरर्थक ही है। **(क्रमश:)**

१. मोक्षमार्गप्रकाशक, नौवाँ अधिकार, पृष्ठ ३०७ २. वही, पृष्ठ ३०९

(पृष्ठ ३ का शेष...)

(दोहा)

चारों गति ए कुगति हैं, पर गति अगति मिलाप।
इन गति विगति जु गति लसै, सो गति सिव गति आप।।५२।।
जिन सिव गति की गति लखी, तिन गति लखी समस्त।
भव–गति गति मैं जे परै, ते भव–गत सुख अस्त।।५३।।

उपर्युक्त पद्यों में कवि कहते हैं कि देवगति नामकर्म एवं देवायु कर्म के उदय से जीव चतुर्निकाय के देवों में उत्पन्न होते हैं। मनुष्य तथा तिर्यंच गति में बहुत प्रकार है एवं एकेन्द्रिय से पंचेन्द्रिय पशु – सब तिर्यंचगति के जीव हैं। तिर्यंचगति में कर्म भूमिज और भोग भूमिज होते हैं, तथा नरक गति व नरक आयु कर्म के उदय से जीव नरकों में उत्पन्न होते हैं। जैनधर्म जाने बिना ये जीव अनादि से जन्म–मरण कर रहे हैं।

इस गाथा पर व्याख्यान करते हुए गुरुदेव श्रीकानजीस्वामी कहते हैं कि देवगति नामकर्म के उदय से देव का शरीर मिलता है। वे चार प्रकार के हैं। भवनवासी, व्यन्तर, ज्योतिषी और वैमानिक।

आत्मा स्वभाव से तो सिद्ध समान है। चार गति से विलक्षण चैतन्यस्वभावी जिसका लक्षण है – ऐसी आत्मा के भान बिना जीव चतुर्गति में भ्रमण करता है। शुभभाव के फल में देवरूप में उत्पन्न होता है।

जो जीव अपने स्वभाव से चूककर मनुष्यगति के लायक शुभभाव करे तो मनुष्य होता है। तिर्यंचगति के जीव एकेन्द्रिय से लेकर संज्ञी पंचेन्द्रिय पशु तक होते हैं। जो जीव अपने स्वभाव से चूककर कपट एवं दम्भ करते हैं, उसके फल में वे पशु होते हैं, उनका शरीर आड़ा होता है; क्योंकि उन्होंने पूर्व में अपने और दूसरों के साथ छल–कपट किया था। जो जैसे भाव करता है, उसे वैसा फल मिलता है। इसलिए कहते हैं कि छल–कपट और पाँचों पापों की रुचि छोड़ तथा अपने ज्ञानानन्द स्वभाव की रूचि कर।

अब नरकों की बात करते हैं। नरक सात हैं, तथा उनमें रहने वाले नारकी भी सात प्रकार के हैं। जो जीव मांस खाते हैं, मदिरा पीते हैं, वे नरक में जाते हैं। वहाँ भी जीव अपने क्रूर भावों का फल भोगते हैं; नरक का क्षेत्र तो निमित्तमात्र है।

आत्मा स्वयं तो ज्ञान स्वभावी हैं; परन्तु उस आत्मा की रुचि नहीं करता, इस कारण चारों गतियों में भटकता है। अतः हमें प्राप्त मनुष्य पर्याय की दुर्लभता को समझकर वस्तु स्वरूप को एवं आत्मस्वभाव को समझना चाहिए। ●

2 जनवरी 2012, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J.P.C / FN-32 / 2012-14

दानदातारों से निवेदन

पण्डित टोडरमल स्मारक ट्रस्ट के बैंक अकाउंट में इन्टरनेट बैंकिंग द्वारा दानराशि भेजने वाले सभी दातारों से निवेदन है कि वे जो भी दानराशि बैंक में डायरेक्ट जमा कराते हैं, उसकी जानकारी जयपुर कार्यालय को पत्र/ई-मेल/फैक्स/एस.एम.एस. द्वारा अवश्य भेजें, ताकि उसका जमाखर्च कर उसकी रसीद भेजी जा सके।

संपर्क सूत्र : श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-4, बापूनगर, जयपुर-15; 0141-2707458,2705581, फैक्स नं.-2704127
E-mail- info@ptst.in, ptstjaipur@yahoo.com
09314404177 (जवाहरलालजी जैन, अकाउन्टेन्ट)
09785643202 (पीयूषजी जैन, मैनेजर)

कमल शुद्धि संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ जौहरी बाजार स्थित श्री आदिनाथ दि. जैन मंदिर दीवान भदीचन्दजी में दिनांक 4 दिसम्बर,2011 को जिनमंदिर की नौ प्राचानी वेदियों पर स्वर्णमंडित 27 पाषाण कमलों की स्थापना करके जिनप्रतिमायें विराजमान की गई। इसके लिये जलयात्रा पूर्वक कमल शुद्धि एवं यागमंडल विधान आदि समस्त कार्यक्रम पण्डित संजीवकुमारजी गोधा जयपुर के निर्देशन में संपन्न हुये। **-डॉ. सुरेन्द्र दीवान**

जयपुर पंचकल्याणक के प्रसंग पर आदिनाथ की माता का -

भव्य अभिनन्दन समारोह संपन्न

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले पंचकल्याणक में बनने वाली आदिनाथ की माता श्रीमती सुशीलादेवी का वीतराग विज्ञान महिला मण्डल द्वारा दिनांक 25 दिसम्बर को भव्य स्वागत किया गया। साथ ही बधाई गीत भी गाये गये। **- स्तुति जैन**

आवास आरक्षण फार्म भरकर जल्दी भेजें

21 से 27 फरवरी तक टोडरमल स्मारक भवन जयपुर में होने वाले पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव के अवसर पर आवास के आरक्षण हेतु फार्म भरकर शीघ्र भेजें।

यदि आपने अभी तक अपना आरक्षण नहीं कराया हो तो कृपया शीघ्रता करें।

पूज्य गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के समस्त ऑडियो - वीडियो प्रवचन साहित्य एवं अन्य अनेक जानकारियों के लिये अवश्य देखें-
वेबसाईट - www.vitragvani.com
संपर्क सूत्र-श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई
Ph. : 022-26130820, 26104912, E-Mail - info@vitragvani.com

मुकुन्दभाई खारा नहीं रहे

गुरुदेवश्री कानजीस्वामी स्मारक ट्रस्ट देवलाली के अध्यक्ष **मुम्बई निवासी श्री मुकुन्दभाई खारा** का दिनांक 29 दिसम्बर, 2011 को 87 वर्ष की आयु में शांतपरिणामोंपूर्वक देहावसान हो गया।

आप गुरुदेवश्री कानजीस्वामी के प्रमुख अनुयायीयों में से एक थे, टोडरमल स्मारक ट्रस्ट जयपुर के अनन्य सहयोगी एवं ब्र. शांताबेन के छोटे भाई थे। देवलाली ट्रस्ट एवं सीमंधर जिनालय मुमुक्षु मण्डल मुम्बई की स्थापना व उन्नति आपके ही प्रयासों का फल है। आप मुमुक्षु समाज की अनेकों संस्थाओं से जीवन पर्यंत जुडे रहे। मुमुक्षु समाज की एकता के लिये किये गये आपके प्रयास भी किसी से छिपे नहीं हैं। आपके चिर वियोग से मुमुक्षु समाज को अपूरणीय क्षति हुई है।

अनेक दिनों से शारीरिक अस्वस्थता होने के बावजूद भी आपके हृदय में जयपुर पंचकल्याणक में आने हेतु अत्यंत उत्साह था।

दिवंगत आत्मा चतुर्गति से छूटकर शीघ्र ही अभ्युदय को प्राप्त हो - यही मंगल भावना है।

आगामी कार्यक्रम...

हार्दिक आमंत्रण

जयपुर (राज.) : यहाँ श्री टोडरमल स्मारक भवन में होने वाले श्री आदिनाथ दि. जिनबिम्ब पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव की तैयारियाँ जोर-शोर से चल रही है।

इसी क्रम में दिनांक 29 जनवरी 2012 को पंचकल्याणक की बहुरंगी सुन्दर एवं आकर्षक आमंत्रण पत्रिका का विमोचन टोडरमल स्मारक भवन में ही होने जा रहा है।

अत: सभी साधर्मियों से निवेदन है कि अधिक से अधिक संख्या में पधारकर कार्यक्रम की शोभा बढायें।

प्रकाशन तिथि : 28 दिसम्बर 2011

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
सह-सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा,** डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127